ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27   अंकः 42   बुलेटिन अवधिः 26 – 30 मई, 2018   दिनः शुक्रवार   दिनाँकः 25 मई, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	26–05–2018	27–05–2018	28–05–2018	29–05–2018	30–05–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	1	5	10
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	28	28	27	25
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	17	17	18	16	15
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	साफ	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	75	70	75	80	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	35	30	35	40	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	008	008	008
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी 28 से 30 मई को हल्की वर्षा होने तथा आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (18 से 24 मई 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ आंशिक बादल छाये रहे तथा में अधिकतम तापमान 20.5 से 28.3 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.3 से 16.4 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ बसन्त ऋतु में यदि गन्ने में चौडी पत्तियो वाले खरपतवार की बहुलता हो तो 2,4 डी0 सोडियम साल्ट का 0.75 से 1किग्रा0 सक्रिय घटक प्रति हेक्टेयर की दर से 750 ली0 पानी में घोल बनाकर 1 हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करे।

यदि कृषि श्रमिक उपलब्ध हो तो गन्ने के खेत में गुड़ाई कर एक हफ्ते तक छोड़कर तत्पश्चात सिंचाई करे। पर्याप्त नमी होने पर नाइट्रोजन का यूरिया के रूप में छिड़काव करे।

- ❖ लोबिया व फ्रासबीन मे पौधे सूखने की स्थिति मे, कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/ली0 पानी की दर से प्रयोग करे।
- ❖ गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें।
- ❖ गेहूँ की मढ़ाई के बाद धान की बुवाई के लिए गहरी जुताई एवं मेड़बन्दी करे।
- ❖ चारा फसलो में सिंचाई के उपरान्त नत्रजन का प्रयोग करे जिससे अत्यधिक चारा प्रयोग किया जा सके।
- ❖ इस समय खाली खेत में गहरी जुताई कर क्षेत्र की मेढ़ बन्दी करे जिससे पानी को संरक्षित किया जा सके।
- ❖ मैदानी क्षेत्रों में, शरद एवं बसंतकालीन गन्ने की सिंचाई, खरपतवार एवं पोषक तत्वो का प्रबन्धन ठीक प्रकार से करे।
- ❖ मैदानी क्षेत्रों में, बसंतकालीन गन्ने में खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के तीन दिन के अंदर या 15–20 दिन पर 2–3 पत्ति अवस्था में वैलपार के–4 की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने में निराई–गुड़ाई के उपरांत सिंचाई के बाद नत्रजन का प्रयोग करें।
- ❖ बसंतकालीन गन्ने में कल्ले निकलने की अवस्था में गुड़ाई करने के एक हफ्ते बाद सिंचाई करें एवं मैट्रीब्यूजीन/एट्राजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का प्रयोग करें व खरपतवारों का नियंत्रण करें।

उद्यानप्रबन्धः

- ❖ मध्यम एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रो में, आलू की खड़ी फसल में झुलसा रोग रोकने हेतु मैन्कोजेब रसायन का छिड़काव करें (20 ग्राम 10 लीटर पानी में घोलकर)।
- ❖ घाटी क्षेत्रो मे, राई, मूली, शलजम, फूलगोभी जैसी बीजू फसलों में यदि बीज पकने की अवस्था हो तो सिंचाई रोक दें एवं जैसे ही फसल पक जाये कटाई कर दें।
- ❖ टमाटर व मिर्च मे पत्तियो पर धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ मध्यम व उँचे पर्वतीय क्षेत्रो मे पॉलीहाउस मे शिमलामिर्च, बैगन की पौध का रोपण करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- ❖ प्याज मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली0 प्रति है0 की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी एवं स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
- ❖ मिर्च व टमाटर की फसल मे विषाणु जनित रोगो के नियत्रंण हेतु संक्रमित पौधो को निकालकर नष्ट कर दें।
- ❖ टमाटर व मिर्च की फसल मे सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें। पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- ❖ मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आड़ू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़काव करें।

पशुपालनप्रबन्धः

- ❖ पशुओ को आहार मौसम के अनुसार ही दे, इस समय पशुओ के आहार मे गेंहू का चोकर व ज्वार की मात्रा मे वृद्धि कर दे।
- ❖ गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॉन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- ❖ विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- ❖ अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।

- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।
- भैंसों को पशुशाला में सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रखना चाहिए, जिससे उन्हें तेज धूप से बचाया जा सके।

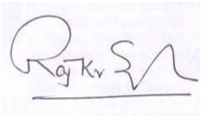

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर